ailed information on ayurveda books, visit our website www.ejaypee.com, for detailed information on ayurveda books, visit our website www.ejaypee.com

नाड़ी विज्ञान संग्रह

Pulse Diagnosis through Ayurveda

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा
वैद्य मनोज कुमार शर्मा
वैद्य अभिजीत ताराचन्द शर्मा

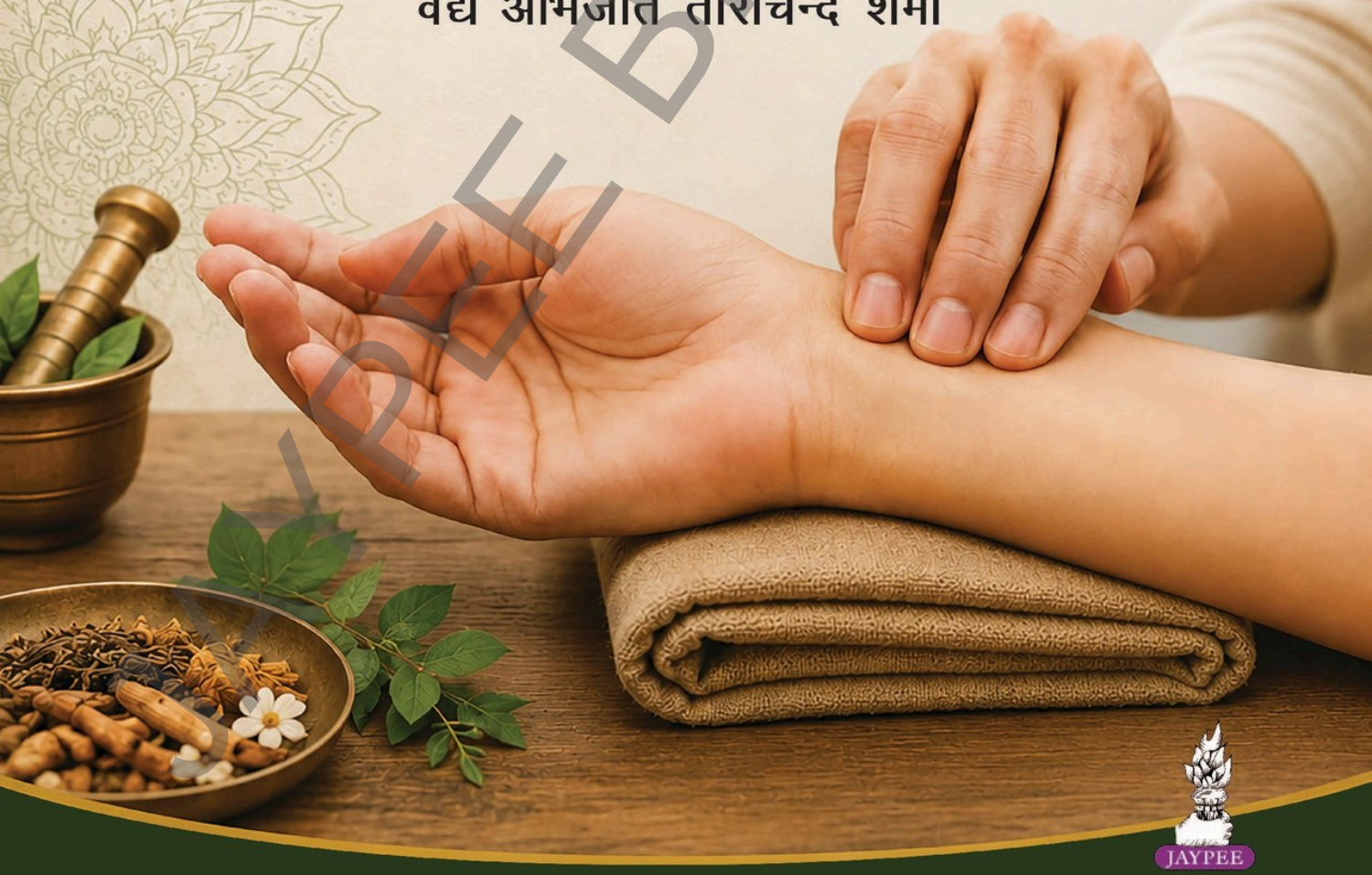

JAYPEE BROTHERS

JAYPEE

इस प्रकार दो, तीन आदि रसों का मिश्रण सेवन करने पर नाडी भी अनेक तरह की गतिवाली हो जाती है।।65।।

रसों द्वारा दोष शमन कोपन

रसानां शमनकोपनत्वम्-

स्वाद्वम्ललवणा वायुं कषायस्वादुतिक्तकाः।
जयन्ति पित्तं श्लेष्माणं कषायकटुतिक्तकाः।। (कणाद 66)

मीठा, खट्टा और नमकीन रस वात की शांति करते हैं, कषाय, मीठा तथा तिक्त रस पित्त की शान्ति करते हैं एवं कषाय, कटु तथा तिक्त रस कफ की शान्ति करते हैं।।66।।

कट्वम्ललवणाः पित्तं स्वाद्वम्ललवणाः कफम्।
कटुतिक्तकषायाश्च कोपयन्ति समीरणम्।। (कणाद 67)

कडवा, खट्टा और नमकीन, ये रस पित्त को कुपित करते हैं, मीठा, खट्टा और नमकीन रस कफ को कुपित करते हैं, तथा तीता, कड़वा और कसैला रस वायु को कुपित करते हैं।।67।।

प्रसङ्गवशात् रसानां विपाकमाह-

कटुतिक्तकषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः।
अम्लोऽम्लं पच्यते स्वादुर्मधुरो लवणस्तथा।। (कणाद 68)

तिक्त, कड़वे तथा कसैले पदार्थों का विपाक प्रायः तिक्त होता है, खट्टे रस का विपाक खट्टा ही होता है तथा मीठे और नमकीन चीजों का विपाक प्रायः मीठा ही होता है। प्रायः कहने का मतलब यह है कि इससे कभी कभी विपरीत या अन्यथा भी हो जाता है।।68।।

मधुरो लवणोऽम्लश्च स्निग्धभावास्त्रयो रसाः।
वातमूत्रपुरीषाणां प्रायो मोक्षे सुखा मताः।। (कणाद 69)

मधुर, लवण और खट्टा, तीन रस चिकने होने की वजह से वायु, मूत्र और मल को बाहर निकालने में सरलता लाने वाले हैं। कारण यह, कि जो चिकना होगा वह वातानुलोमन करेगा तथा कोष्ठ में चिकनाहट होने की वजह से वायु, मूत्र तथा मल आदि कोष्ठ में न रहकर सुखपूर्वक बाहर निकल जायेंगे।।69।।

JAYPEE BROTHERS

कटुतिक्तकषायाश्च रूक्षभावास्त्रयो रसाः।
दुःखानि मोक्षे दृश्यन्ते वातविण्मूत्ररेतसाम्॥ (कणाद 70)

तीता, कड़वा और कसैला, ये तीन रस रूखे होने से वात का कोपन कर विष्टम्भ आदि विकार उत्पन्न करने के कारण वायु, मल, मूत्र तथा वीर्य के बाहर निकलने में दुःखदायी होते हैं अर्थात इन्हें बाहर निकालने से रोकते हैं।।70।।

प्रसङ्गवशात् द्रव्याणामपि रसधर्मत्वमाह-

मधुरं श्लेष्मलं प्रायो जीर्णात् शालियवादृते।
मुदगाद् गोधूमतः क्षौद्रात् सिताया जाङ्गलामिषात्॥ (कणाद 71)

पुराने शालि चावल तथा पुराने जौ के सिवाय अन्यान्य मधुर रस वाले द्रव्य प्रायः कफकारक होते हैं, तथा पुरानी मूंग, पुराना गेहूं, शहद, शक्कर तथा जङ्गली जीवों के मांस भी कफकारक नहीं होते।।71।।

प्रायोऽम्लं पित्तजननं दाडिमामलकादृते॥ (कणाद 72)

अनार और आंवले के सिवाय अन्यान्य खट्टे रस वाले पदार्थ प्रायः पित्त कारक होते हैं। अनार और आंवले खट्टे होने पर भी शीतवीर्य वाले हैं, इससे पित्तकारक नहीं होते। प्रायः शब्द के कहने से कोई पदार्थ पित्तकार भी होते हैं ऐसा अर्थ निकलता है।।72।।

आहार द्रव्यों का नाड़ी पर प्रभाव

द्रवेऽतिकठिना नाडी कोमला कठिनाशने।
द्रवद्रव्यस्य काठिन्य कोमला कठिनाऽपि च॥ (कणाद 73)

तरल पदार्थों के भोजन करने पर नाड़ी कठिन होकर याने डंडे जैसी मोटी तथा कड़ी होकर चलती है। कड़े पदार्थ जैसे लड्डू आदि के भोजन करने पर नाड़ी छूने पर गुदगुदी मालूम होती हुई चलती है। यदि द्रव पदार्थ किसी प्रकार जमाकर कठिन कर दिया जाय तो उसके भोजन करने पर नाड़ी कभी तो कोमल और कभी कठिन मालूम होती है या यों समझिये कि कोमल भी मालूम पड़ती है और कठिन भी, जैसे बाहर से कुछ भीगा हुआ मिट्टी का सूखा ढेला पहले तो कोमल मालूम पड़ता है फिर दबाने से कठिन। ऐसी ही नाड़ी को भी जानिये।।73।।

अम्लेश्च मधुराम्लैश्च नाडी शीता विशेषतः।
चिपिटैर्भृष्टद्रव्येश्च स्थिरा मन्दतरा भवेत्॥ (कणाद 74)

JAYPEE BROTHERS

खट्टे पदार्थ के खाने से (यहां खट्टे पदार्थ कहने से शीतवीर्य वाले अनार आंवलादि को ही लेना चाहिए, क्योंकि ये शीतवीर्य होने के कारण नाड़ी पर भी शीत प्रभाव डालते हैं, अन्यथा खट्टे रस से पित्त कुपित होकर नाड़ी की गति उष्ण तथा तेज हो जायेगी) तथा खट्मिट्ठे पदार्थों के खाने से नाड़ी खासकर ठंडी मालूम पड़ती है। चिउड़ा और भुने हुए द्रव्य, जैसे चना आदि के भक्षण करने पर नाड़ी की गति स्थिर तथा बहुत मन्दी होती है।।74।।

कुष्माण्डैर्मूलकैश्चैव मन्दा मन्दा च नाडिका।
शाकैश्च कदलैश्चेव रक्तपूर्णेव नाडिका।। (कणाद 75)

पेठा तथा मूली के भक्षण करने पर नाड़ी की चाल मन्दी-मन्दी सी हो जाती है तथा शाक याने पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द तथा संस्वेदज इन छः प्रकारों में किसी एक के तथा केले के फल के भक्षण से नाड़ी रक्तपूर्ण जैसी चलती है, याने ऐसा मालूम पड़ता है मानों नाड़ियों में खून भरा हुआ है।।75।।

मांसात् स्थिरवहा नाडी दुग्धे शीता बलीयसी।
गुडैः क्षीरैश्च पिष्टैश्च स्थिरा मन्दवहा भवेत्।। (कणाद 76)

मांस के भक्षण करने से नाड़ी स्थिरता लेकर चलती है याने न मन्द रहती है और न चञ्चल तथा गति एक सी ही हो जाती है याने धीरे स्थिर भाव से एक सी चाल चलती रहती है। दूध के भोजन में नाड़ी शीत स्पर्श लेकर बलवती होकर चलती है अर्थात् गति में तेजी न होने पर भी जड़ता नहीं होती। गुड़, दूध तथा पीठी आदि के भक्षण से नाड़ी की गति स्थिर और मन्दी होती है। पहले मांस भक्षण से नाड़ी का डंडे जैसी होना कह आये हैं, यहां फिर स्थिरवहा कहने का अर्थ यह कि नाडी डंडे जैसी होने पर भी स्थिर याने अचञ्चल होती है। दूध के भोजन से स्तिमित वेग वाली, शीता, बलीयसी तथा स्थिर मन्दवहा, ये तीन भिन्न भिन्न गतियों के कहने से दूध के भिन्न-भिन्न अवस्था तथा गौरवादि के अनुसार ही समझना चाहिये, जैसे-धारोष्ण दूध के पीने पर सद्योबलकर होने के कारण नाड़ी की गति शीत व बलवती हुई, बिना गरम किया ठंडा दूध पिया तो शीतल व कफकारक होने से नाड़ी स्तिमित वेगवाली होती है। तथा आधा गरम दूध पीने से भारी होने की वजह से नाड़ी की गति स्थिर तथा मन्द होती है आदि।।76।।

गुडरम्भामांसरूक्षशुष्कतीक्ष्णादिभोजनात्।
वातपित्तार्तिरूपेण नाडी वहति निश्चला।। (कणाद 77)

JAYPEE BROTHERS

गुड़, केले का फल, मांस, रूक्ष पदार्थ जैसे भुने चने या अन्यान्य भुने द्रव्य, सूखे पदार्थ जैसे चिउड़ा आदि, तीक्ष्ण जैसे सरसों, अदरक आदि द्रव्यों के अकेले या दो तीन द्रव्य मिलाकर खाने से नाड़ी वात-पित्त के प्रकोप की जैसी गति वाली हो जाती है याने कभी टेढ़ी कभी तिरछी, कूदती हुई चलती हैं तथा इनमें चञ्चलता अधिक होती है।।77।।

अम्लेऽपि हृद्यसुस्थत्वे भवन्ति तापितः शिराः।। (कणाद 78)

खट्टे पदार्थों के भोजन करने पर यदि हृदय में जलन आदि पैदा हो जाय तो (अपि कहने से यदि न भी हो तो भी) नाडियां गरम हो जाती है। इसमें अनार आदि पित्त को कुपित न करने वाले पदार्थों को छोड़ अन्य खट्टे पदार्थ ही समझना चाहिये, क्योंकि बिना पित्त के कोप के नाडी गरम नहीं होती। यदि हृदय में जलन आदि न हो तो कम और हो तो अधिक गरमी नाड़ियों में होगी, यह भी समझना चाहिए अथवा अम्ल रस के हृद्य एवं अविकारी मात्रा में भोजन करने पर भी नाड़ी उष्ण चलती है।



JAYPEE BROTHERS

for detailed information on ayurveda books, visit our website www.ejaypee.com, for detailed information on ayurveda books, visit our website www.ejaypee

नाड़ी विज्ञान संग्रह

Pulse Diagnosis through Ayurveda

मुख्य विशेषताएँ

- पुस्तक में कणाद, रावण एवं वसवराज का नाड़ी वर्णन
- नाड़ी विषयक विभिन्न विद्वानों के विचार
- द्रुत नाड़ी परीक्षा का वर्णन
- स्वस्थ एवं रूग्ण विशेष की नाड़ी
- नाड़ी परीक्षा पर मेरे अनुभव
- विभिन्न संग्रह ग्रन्थों में आया नाड़ी वर्णन
- नाड़ी दर्शन में दोष क्रम भिन्नता का निराकरण
- मृत्यु कारक नाड़ी स्वरूप एवं काल वर्णन
- नाड़ी ज्ञान का महत्व एवं अभ्यास की प्रमुखता

स्व. पं. रामदत्त जी शर्मा के सुपुत्र **आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा** एम.डी. आयुर्वेद ने अपना आयुर्वेद अध्ययन वैद्य मुरारी मिश्र एवं वैद्य रामकृष्ण शर्मा जी के सानिध्य में नि.भा.आयु. विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त की, 1968 से महाविद्यालयों में अध्यापन कराते हुए आयुर्वेद के अनेक विषयों पर पुस्तकों का लेखन किया। 1980 में पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से एम.डी. आयुर्वेद की उपाधि प्राप्त कर दिल्ली के मूलचन्द हॉस्पिटल में वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी के पद पर आयुर्वेद विश्वकोश तैयार किया जिसका एक भाग **"पञ्चकर्म चिकित्सा विज्ञान"** चौखम्बा से प्रकाशित हो चुका है।

विगत 50 वर्ष से आयुर्वेद में लेखक, चिकित्सक, शोधकर्ता आदि के रूप में प्रसिद्ध है, 200 से अधिक अनेक पत्र पत्रिकाओ के लेख एवं 65 के करीब पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। सी.सी.आर.ए.एस. की पाँच पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद कर चुके है। आपको अनेक मानद उपाधियों से सम्मानित किया गया है। आर.ए.वी. द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड एवं दिल्ली सरकार द्वारा **"वरिष्ठ नागरिक सम्मान"** एवं 20 फरवरी 2025 को आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा **"धन्वन्तरि पुरस्कार"** प्रदान किया गया है।

वैद्य ताराचन्द शर्मा के सुपुत्र **वैद्य मनोज कुमार शर्मा** ने चिकित्सा में प्रारम्भ से अपने पिता का सहयोग करते हुए इन्होंने सन् 1995 से फार्मेसी में कार्य आरम्भ कर दिया एवं समय के अभाव के कारण सन् 2013 में बी.ए.एम.एस. उत्तीर्ण कर पिताजी के साथ चिकित्सा कार्य में लग गये। रोहिणी एवं विभिन्न क्षेत्रों में सैकड़ों नि:शुल्क चिकित्सा शिविरों में भाग लिया एवं निरन्तर शिविर लगाने के साथ पुस्तकों की पाण्डुलिपि तैयार करने में भी पूर्ण सहयोगी रहे है। नाड़ी परीक्षा में निरन्तर अग्रसर हैं। अपने अनुभव से अपने पिता की पुस्तक लेखन में सहायक एवं लेखक के रूप में अनेक पुस्तकों में कार्य कर रहे हैं। त्रिफला, आयुर्वेदज्ञा जैनाचार्य चरित्रकोष, आयुर्वेद कृतित्व परिचय कोष, सॉल्वड प्रश्न-उत्तर पेपर फॉर बी.ए.एम.एस. प्रथम साल आदि अनेक पुस्तकों में लेखक के रूप में कार्य किया एवं भविष्य की पुस्तकों में कार्यरत है।

वैद्य मनोज कुमार शर्मा के सुपुत्र **वैद्य अभिजीत ताराचन्द शर्मा** ने बचपन से ही आयुर्वेद के विभिन्न कार्यक्रमों में अपने दादा व पिता के कारण सम्मिलित होते रहे है। 2016 में बी.ए.एम.एस. के प्रथम वर्ष से ही लेखन कार्य में अपना सहयोग देना आरम्भ कर दिया था। नव युवकों को पठन-पाठन में होने वाली समस्याओं का ध्यान करते हुए पुस्तकों का नवीनीकरण करने एवं विषय को समझने के लिए टेबल, चार्ट्स आदि का निर्माण एवं सॉल्वड प्रश्न-उत्तर पेपर का निर्माण करने का सुझाव भी दिया। अभी तक 15 से ज्यादा पुस्तकों में यह सहायक लेखक का कार्य कर चुके है एवं सॉल्वड प्रश्न-उत्तर पेपर फॉर बी.ए.एम.एस. प्रथम वर्ष दूसरा एडिशन जैसी पुस्तक में यह लेखक के रूप में अपना कार्य आरंभ कर चुके है।

JAYPEE BROTHERS

Buy from ejaypee

JAYPEE BROTHERS

ISBN 978-81-69781-70-1